C-II- Guidance & Counselling
B.Ed - द्वितीय
Teacher Traning College

Personality ('व्यक्तित्व')

↓

लैटिन भाषा — पर्सोनअर

↓

धारण करने के सदृश

Origin of Personality Word

समय बीतने के साथ ही Persona शब्द का अर्थ परिवर्तित होता चला गया। ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में रोम के प्रसिद्ध लेखक और कूटनीतिज्ञ सिसरो ने इसका प्रयोग चार अर्थों में किया—

1) जैसा कि एक व्यक्ति दूसरे को दिखाई देता है पर वैसा वह वास्तव में है नहीं,
2) वह कार्य जो जीवन में कोई करता है; जैसे कि दार्शनिक;
3) व्यक्तिगत गुणों का संकलन, जो एक मनुष्य को उसके कार्य के योग्य बनाता है;
4) विशेषता और सम्मान, जैसा कि लेखन शैली में होता है;

इस प्रकार तेरहवीं शताब्दी तक 'Persona' शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में होता रहा। चौदहवीं शताब्दी में मनुष्य की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करने के लिए एक नये शब्द की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा। इस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए Persona को Personality शब्द में रूपान्तरित कर दिया गया।

Date :

Meaning of Personality

"व्यक्तित्व शब्द में एक मनुष्य के न केवल शारीरिक और मानसिक गुणों का, वरन् उसके सामाजिक गुणों का भी समावेश होता है। पर इतना कहने से भी व्यक्तित्व का अर्थ पूर्ण नहीं होता है। कारण यह है कि यह तभी संभव है, जब एक समाज के सब सदस्यों के विचार, संवेगों के अनुभव और सामाजिक क्रियायें एक-सी हों। ऐसी दशा में व्यक्तित्व का प्रश्न ही नहीं रह जाता है। इसीलिये मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि व्यक्तित्व - मानव के गुणों, लक्षणों, क्षमताओं विशेषताओं आदि को संगठित इकाई है। जैसा कि मन ने लिखा है - "व्यक्तित्व की परिभाषा, व्यक्ति के ढाँचे व्यवहार की विधियों, रुचियों, अभिवृत्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं और कुशलताओं के सबसे विशिष्ट एकीकरण के रूप में की जा सकती है।

ii) According to Drever :- "व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग, व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गत्यात्मक संगठन के लिये किया जाता है, जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान-प्रदान में व्यक्त करता है।

Scanned with CamScanner

According to Warren :→ "व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है जो इसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।

Factors of Influencing Personality

शारीरिक रचना का प्रभाव :→ शारीरिक रचना के अन्तर्गत शरीर के अंगों का पारस्परिक अनुपात, शरीर की लम्बाई और भार, नेत्रों और बालों का रंग, मुखाकृति आदि आते हैं। ये सभी किसी न किसी रूप से व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार उस बालक अथवा बालिका में संवेगात्मक असंतुलन के कारण एक अलग व्यक्तित्व का विकास हो जाता है। जबकि साधारण रूप में उसके व्यक्तित्व का विकास दूसरी प्रकार से होता है। इस प्रकार शारीरिक संरचना का स्पष्ट रूप से प्रभाव पड़ता है।

मानसिक घातक कारक :→ व्यक्ति में जितनी अधिक मानसिक योग्यता होती है, उतना ही अधिक वह अपने व्यवहार समाज के आदर्श और प्रतिमानों के अनुकूल बनाने में सफल होता है। परिणामतः व्यक्ति का उतना ही अधिक विकास होता है।

Scanned with CamScanner

According to Prince → " व्यक्तित्व समस्त जन्मजात संस्कारों, आवेगों, प्रवृतियों झुकावों एवं मूल-प्रवृतियों और अनुभव अर्जित संस्कारों एवं प्रवृतियों का योग है।

iii) संवेगात्मक कारक → ये बालक का संवेगात्मक व्यवहार उसके विकास के अन्य पहलुओं के अनुरूप होता है। और उससे उसका अन्त: सम्बन्ध होता है।

According to Spitz → "संवेग जन्म से ही विद्यमान नहीं रहते हैं। मानव-व्यक्तित्व के किसी भी अंग के समान इनका विकास होता है।

iv) वातावरण एवं व्यक्तित्व विकास → वातावरण सम्बन्धी तत्व भी व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं। व्यक्ति के विकास में पर्यावरण, जिसमें व्यक्ति रहता है। और वह अनुभव जो दूसरों के सम्पर्क के कारण उत्पन्न होते हैं, अपना अमिट तथा स्पष्ट प्रभाव डालते हैं।

i) भौतिक वातावरण का प्रभाव -

ii) सामाजिक वातावरण का प्रभाव -

(a) माता-पिता का प्रभाव

(b) पारिवारिक सम्बन्ध -

(c) पड़ोस का प्रभाव -

(d) आर्थिक स्थिति

(e) सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव etc.

Scanned with CamScanner

function of Guidance and Counselling Service
Role and Requirement of Guidance & Counselling

मानव यन्त्रों की भीड़ में स्वयं भी यन्त्रवत् बनता जा रहा। भारत आदि अनेक देशों की सरकारों ने मानव को संसाधन मानकर इस आग में घी डालने का काम किया है।

आधुनिक तकनीकी युग में मनुष्य का अधिकांश समय किसी न किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने में ही व्यतीत होता है। इसके अतिरिक्त मनुष्य के जीवन का महत्वपूर्ण भाग, जिसे हम किशोरावस्था एवं युवावस्था के नाम से सम्बोधित करते हैं विद्यालयों में बीतता है। इसलिये इसके सामने शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता पड़ती है।

अध्ययन में मन लगाने के लिए, उपलब्धि का स्तर ऊँचा उठाने के लिए, आदत में सुधार के लिए अथवा इसी तरह के किसी अन्य कारण से जब हम अपने उपबोध्य को सकारात्मक निर्देशन दें तथा उसे आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करें। उपबोध्य को सकारात्मक निर्देशन दें तथा उसे समझने के लिए स्वतन्त्र करें निर्देशन की प्रक्रिया लचीली होनी चाहिए। व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को समान महत्व दिया जाना चाहिए तथा उपबोध्य के सम्पूर्ण विकास

का प्रयास करना चाहिये।

परामर्श निर्देशन का एक महत्वपूर्ण अंग है, दोनों का ही उद्देश्य भी एक ही होता है। क्योंकि जिस प्रकार निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति को आत्म-सम्मान के योग्य बनाता है। इसी प्रकार परामर्श के माध्यम से भी व्यक्ति को आस-पास निर्देशन हेतु सक्षम बनाया जाता है। परन्तु फिर भी इन दोनों में पर्याप्त अन्तर है। निर्देशन किसी भी व्यक्ति के द्वारा प्रदान किया जा सकता है, यह आवश्यक नहीं है कि निर्देशन प्रदान करने वाला व्यक्ति पूर्व प्रशिक्षित ही हो, परन्तु परामर्शदाता के लिये, पूर्व प्रशिक्षित होना परम आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त दोनों में से एक प्रमुख अन्तर यह है कि परामर्श एक समय में केवल एक ही व्यक्ति के लिये उपलब्ध होता है, जबकि निर्देशन वैयक्तिक एवं सामूहिक दोनों प्रकार का होता है साथ ही निर्देशन किसी व्यक्ति के द्वारा ही प्रदान किया जाये यह आवश्यक नहीं है पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं जनसंचार के द्वारा भी निर्देशन सुलभ कराया जा सकता है, परामर्श में पारस्परिक विचार-विमर्श एवं तर्क-वितर्क इत्यादि को विशेष महत्व प्रदान किया जाता है। निर्देशन तथा परामर्श की प्रक्रिया एक-दूसरे की पूरक है।